पाठ 2. तुलसीदास

धनुष- भंग

1. उदित उदयगिरि मंच पर रघुबर बालपतंग |
   बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग ॥
   नृपन्ह केरि आसा निसि नासी । बचन नखत अवली न प्रकासी ॥
   मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने ॥
   भए विसोक कोक मुनि देवा । बरसहिं सुमन जनावहिं सेवा ॥
   गुर पद बंदि सहित अनुरागा । राम सुनिन्ह सन आयसु मागा ॥
   सहजहिं चले सकल जग स्वामी । मत्त मंजु बर कुंजर गामी ॥
   चलत राम सब पुर नरनारी । पुलक पूरि तन भए सुखारी ॥

(अ) विश्वामित्र जी ने रामचन्द्र जी से क्या कहा ?

उत्तर - (अ) विश्वामित्र जी ने रामचन्द्र जी से कहा - "हे राम ! उठो, धनुषभंग करो तथा जनसन्ताप को दूर करो। "

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - श्रीरामचन्द्र जी ने गुरुचरण वन्दन कर सप्रेम मुनियों से आज्ञा प्राप्त की और इसके बाद उन्हें चलते हुए देख पुरवासी सभी नर-नारी रोमांचित होते हुए प्रसन्नता का अनुभव करने लगे ।

(स) इन पंक्तियों में किस भाषा का प्रयोग किया गया है?

(स) शुद्ध एवं परिमार्जित अवधी भाषा का प्रयोग किया गया है।

2. बोली चतुर सखी मृदु वानी। तेजवंत लघु गनिअ न रानी ॥
कहूँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा। सोषेउ सुजसु सकल संसारा ॥
रबि मंडल देखत लघु लागा। उदयँ तासु तिभुवन तम भागा ॥

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- (अ) सन्दर्भ-प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'धनुष भंग' शीर्षक पाठ से लिया गया है। यह प्रसंग रामचरितमानस के बालकाण्ड से संकलित है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास हैं। यहाँ जनक की प्रतिज्ञा विषयक चर्चा सीता जी की माता अपनी सखियों से कर रही हैं। सखियाँ सतर्क उत्तर दे रही हैं कि राम को आप छोटा बालक न समझें ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - एक चतुर सखी मधुर वाणी में बोली- हे रानी ! इन तेजस्वियों छोटा नहीं समझें क्योंकि कहाँ अगस्त्य मुनि और कहाँ अपार समुद्र ! जिसे उन्होंने सोख लिया, जिसके कारण सम्पूर्ण संसार में उनका सुयश फैल गया है।

(स) इन पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है?

(स) अनुप्रास तथा उदाहरण अलंकारों का सुप्रयोग हुआ है।

3. प्रभुहिं चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल ।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल ॥
गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी। प्रगट न लाज निसा अवलोकी ॥
लोचन जल रह लोचन कोना । जैसे परम कृपन कर सोना ॥
सकुची व्याकुलता बड़ी जानी । धरि धीरज प्रतीति उर आनी ॥
तन मन बचन मोर पन साचा । रघुपति पद सरोज चितु राचा ॥

(अ) इन पंक्तियों में तुलसीदास जी ने किसका वर्णन किया है?

उत्तर- (अ) इन पंक्तियों में तुलसीदास जी ने सीता जी की मनोदशा का चित्रण किया है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - उस समय सीता जी के चंचल नेत्र इस प्रकार शोभित हो रहे थे जैसे चन्द्रमण्डल रूपी डोल में कामदेव की दो मछलियाँ क्रीड़ा कर रही हों।

(स) इन पंक्तियों में किस शैली का प्रयोग किया गया है?

(स) वर्णनात्मक प्रबन्ध शैली ।

4. दिसिकुंजरह कमठ अहि कोला । धरह धरनि धरि धीर न डोला ॥
राम चहहिं संकर धनुं तोरा । होहु सजग सुनि आयसु मोरा ॥
चाप समीप राम जब आये। नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए ॥
सब कर संसउ अरु अग्यानू । मंद महीपन्ह कर अभिमानू ॥
भृगुपति रि गरब गरुआई । सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई ॥
सिय कर सोचु जनक पछितावा । रानिन्ह कर दारुन दुख दावा ॥

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- (अ) सन्दर्भ — प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'धनुष भंग' शीर्षक पाठ से लिया गया है। यह प्रसंग रामचरितमानस के बालकाण्ड से संकलित है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास हैं । प्रस्तुत अंश में लक्ष्मण जी दिग्गजों, कच्छप, शेषनाग, वाराह आदि से धैर्यपूर्वक पृथ्वी को थामने के लिए कह रहे हैं क्योंकि रामचन्द्र जी ने पुलकित होकर उस शिवजी के की नीयत से देखा है। अन्य जनसमूह की उस समय क्या दशा हो रही है, यही यहाँ वर्णित है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - जब श्रीरामचन्द्र जी उस पूर्ववर्णित शिव जी के धनुष को तोड़ने के लिए धनुष के निकट आये तब सभी दर्शक स्त्री-पुरुषों ने अपने इष्ट देवों को तथा पुण्यों को याद किया ।

(स) इन पंक्तियों में किस छन्द का प्रयोग किया गया है?

(स) दोहे तथा चौपाई छन्दों का प्रयोग हुआ हैं।

वन-पथ पर

5. पुर तें निकसी रघुवीर-वधू, धरि धीर दये मग में डंग द्वै ।
झलकी भरि भाल कनी जल की, पुट सूख गये मधुराधर 'द्वै ॥
फिर बूझति हैं- "चलनो अब केतिक, पर्णकुटी करिहौं कित हवै?"
तिय की लखि आतुरता पिय की अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै ॥

(अ) उपर्युक्त पंक्तियों में किसका वर्णन किया गया है?

उत्तर- उपर्युक्त पंक्तियों में वन की ओर जाती हुई सीता जी की दशा का वर्णन किया गया है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- सीता जी के मस्तक पर पसीने की बूँदें दिखाई देने लगीं क्योंकि इससे पूर्व तो उस सुकोमल राजकुमारी ने कभी पैदल यात्रा की ही नहीं थी। उनके मधुर कोमल होठों के पुट सूख गये

(स) इन पंक्तियों में किस रस का प्रयोग किया गया है?

उत्तर- संयोग श्रृंगार रस की अनुभूति

6. रानी मैं जानी अजानी महा, पबि पाहन हूँ ते कठोर हियो है ।
राजहु काज अकाज न जान्यो, कह्यो तिय को जिन कान कियो है ॥
ऐसी मनोहर मूरति ये, बिछुरे कैसे प्रीतम लोग जियो है ?
आँखिन मैं सखि ! राखिबे जोग, इन्हें किमि कै बनबास दियो है ? ॥

(अ) ग्रामीण स्त्रियाँ क्या देखती हैं?

उत्तर - ग्रामीण स्त्रियाँ वन में जाते हुए श्रीराम, लक्ष्मण और सीता को देखती हैं।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या - एक स्त्री अपनी सखियों से कहती है-हे सखी! मैं समझती हूँ कि वह राजा जिसने एक स्त्री की बात मान कर इन्हें वनवास दे दिया, वह भी मूर्ख है जो यह भी नहीं जानता कि क्या उचित है और क्या अनुचित है।

(स) इन पंक्तियों में किस भाषा का प्रयोग किया गया है?

उत्तर- कोमल तथा प्रांजल ब्रजभाषा का प्रयोग !

7. सीस जटा, उर बाहू, बिसाल, बिलोंचन लाल, तिरीछी-सी भौंहें।
तून सरासन बान धरे, तुलसी बन-मारग में सुठि सोहैं।
सादर बारहिं बार सुभाय चितै तुम त्यों हमरो मन मोहैं।
पूछति ग्राम बधु सिय सों "कहाँ साँवरे से, सखि रावरे को हैं?" ॥

(अ) एक ग्रामीण स्त्री सीता जी से किसके बारे में पूछती है ?

उत्तर- एक ग्रामीण स्त्री सीता जी से राम जी के बारे में पूछती है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या - अन्त में ग्रामीण स्त्री परिहास करती हुई पूछती है, है सखी! हमें बताओ, ये श्याम रंग के कुमार तुम्हारे कौन हैं?

(स) इन पंक्तियों में किस छन्द का प्रयोग किया गया है ?

उत्तर- सवैया छन्द ।

8. सुनि सुन्दर बैन सुधारस- साने, सयानी हैं जानकी जानी भली ।
तिरछे करि नैन वै सैन तिन्हें, समुझाइ कछू मुसकाइ चली ॥
तुलसी तेहि औसर सो सबै, अवलोकति लोचन - लाह अली |
अनुराग - तड़ाग में भानु उदै, बिगसीं मनो मंजुल कंज- कली ॥

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर - सन्दर्भ -- प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य-पुस्तक से वन-पथ पर' प्रसंग से लिया गया है। यह प्रसंग भक्त शिरोमणि तुलसी द्वारा रचित 'कवितावली' से उद्धृत किया गया है। इसमें वन मार्ग पर जाते हुए श्रीराम और सीता के सौन्दर्य का वर्ण किया गया है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- तुलसीदास जी कहते हैं कि इस अवसर पर सभी सखियाँ सीता जी के उस सुन्दर हाव-भाव को देखकर अपने नेत्रों का लाभ उठा रही थीं।

(स) इन पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है?

उत्तर- रूपक, अनुप्रास तथा उत्प्रेक्षा अलंकारों की सुन्दर योजना ।

पाठ 3. रसखान

सवैया

1. मानुष हों तो वही रसखानि वसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन ।
जौ पसु हौं तो कहा बसु मेरो, चरों नित नंद की धेनु मँझारन ॥
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्मो कर छत्र पुरंदर-धारन।
जो खग हों तो बसेरो करों, मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन ॥

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

उत्तर -- (अ) सन्दर्भ - श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त कविवर रसखान व्रज के प्राकृतिक सौन्दर्य पर मुग्ध थे। प्रस्तुत पद हमारी पाठ्य-पुस्तक में संगृहीत रसखान के सवैयों से लिया गया है। इसमें कवि का ब्रजभूमि के प्रति अनुराग व्यक्त हुआ है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - कवि भगवान से कामना करता है कि हे प्रभु! यदि मैं अगले जन्म में मनुष्य बनूँ तो ब्रज हुआ है। में गोकुल गाँव के ग्वालों के मध्य निवास करूँ, परन्तु मनुष्य योनि में ही मेरा जन्म हो, यह मेरे वश की बात नहीं

(स) इन पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है?

(स) अनुप्रास अलंकार ।

2. धूरि भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी |
खेलत खात फिरें अंगना, पत्र- पैंजनी वाजति पीरी कछोटी ॥
वा छवि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कला निज कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सो लै गयो भाखन-रोटी ॥

(अ) मधुर ध्वनि कहाँ से आ रही है?

उत्तर--(अ) श्रीकृष्ण के चलने-फिरने के कारण उनके पैरों में पहनी हुई पैंजनियों से मधुर ध्वनि होती है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - गोपी कहती है कि उस कौए के भाग्य की कहाँ तक सराहना करें जो श्रीकृष्ण के हाथ से मक्खन और रोटी छीन ले गया। गोपी के कथन का आशय है कि उस कौए से बढ़कर सौभाग्यशाली कौन हो सकता है जिसे श्रीकृष्ण की जूठन खाने का सौभाग्य प्राप्त है

(स) इन पंक्तियों में किस भाषा का प्रयोग किया गया है?

(स) सरस मधुरं व्रजभाषा का प्रयोग।

3. मोर-पखा सिर ऊपर राखिहों. गुंज की माल गरे पहिरोंगी।
ओदि पितम्बर ले लकुटी, बन गोधन ग्वारन संग फिरौंगी।
भावतो वोहि मेरो रसखानि, सो तेरे कहें सब स्वाँग करोगी।
या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरी अधरा न धरौंगी ॥

(अ) गोपी अपने होठों पर क्या रखने से मना करती है?

उत्तर- (अ) गोपी अपने होठों पर बाँसुरी रखने से मना करती है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या--गोपी कहती है कि ठीक है मैं मोर के पंखों का मुकुट भी सिर पर रख लूँगी, गले में गुंजाओं की माला भी पहन लूंगी।

(स) इन पंक्तियों में किस छन्द का प्रयोग किया गया है?

(स) सवैया छन्द ।

पाठ 4. बिहारीलाल भक्ति'

1. सोहत ओढ़े पीत पटु, स्याम सलौने यात |
मनौ नीलमनि सैल पर आतपू पर्यो प्रभात ॥
अधर धरत हरि कैं परत, ओठ-दीठि-पट जोति ।
हरित बाँस की बाँसुरी, इन्द्रधनुष- रँग होति ॥

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर - (अ) सन्दर्भ -- यह दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक के 'भक्ति' शीर्षक दोहों से उद्धृत किया गया है। इसके रचयिता रीति काल के सर्वश्रेष्ठ कवि बिहारीलाल हैं। इस दोहे में बिहारी श्रीकृष्ण के सौन्दय का वर्णन कर रहे हैं।.

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - श्रीकृष्ण के सुन्दर श्यामवर्ण के शरीर पर पीले वस्त्र (पीताम्बर) ऐसे सुशोभित हो रहे हैं। मानो नीलमणि के पर्वत पर प्रातः काल में पड़ती धूप शोभा पा रही हो

(स) इन पंक्तियों में किस भाषा का प्रयोग किया गया है?

(स) मधुर साहित्यिक ब्रजभाषा ।

2. या अनुरागी चित्त की गति समुझे नहिं कोई।
ज्यों ज्यों बूड़े स्याम रंग, त्यों त्यों उज्ज्वलु होइ ॥

तौ लग या मन सदन में हरि आवैं किहि बाट ।
विकट जटै जो लगु निपट, खुटै न कपट कपाट

(अ) कवि के अनुसार श्यामवर्ण कैसे उज्ज्वल होता जाता है?

उत्तर - (अ) कवि के अनुसार जैसे-जैसे श्यामवर्ण श्रीकृष्ण के प्रेम के रंग में भीगता है, वैसे ही जैसे यह उज्ज्वल होता जाता है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - कवि कहता है कि जब तक मेरे मन रूपी घर में मजबूती से लगे कपट रूपी किवाड़ नहीं खुल जाते तब तक भगवान इस घर में किस मार्ग से आ सकते हैं?

(स) इन पंक्तियों में किस छन्द का प्रयोग किया गया है?

(स) दोहा छन्द ।

3. जगतु जनायो जिहिं सकलु, सो हरि जान्यो नाँहि ।
ज्यों आँखिनु सबु देखिए, आँखि न देखी जाँहि ॥
जप माला छापा तिलक, सरै न एको कामु ।
मन काँचे नाचे वृथा, साँचे राधे रामु ॥

(अ) कवि के अनुसार राम किससे प्रेम करते हैं?

उत्तर - (अ) कवि के अनुसार राम सच्चे व्यक्ति से ही प्रेम करते हैं।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या- जिस ईश्वर ने सम्पूर्ण विश्व को प्रकट किया है, रचा है, उस ईश्वर के बारे में यह सारा संसार कुछ भी नहीं जानता है। यह कितने आश्चर्य की बात है कि सबको ज्ञान कराने वाला, देने वाला स्वयं अज्ञात है। उस ईश्वर के विषय में कोई सही-सही नहीं जानता है।

(स) इन पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है?

(स) अनुप्रास एवं यमक अलंकार।

नीति

4. दुसह दुराज प्रजानु कौं, क्यों न बढ़े दुख-दंदु ।
अधिक अँधेरी जग करत, मिलि मावस, रवि चंदु ॥
बसे बुराई जासु तन, ताही को सनमान ।
'भलो भलो कहि छोड़िये, छोटे ग्रह जप, दानु ॥

(अ) किसी देश में दो राजाओं का राज्य होने पर प्रजा पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर- (अ) जब किसी देश में दो राजाओं का राज्य हो जाता है तो प्रजा कष्ट बहुत बढ़ जाते हैं क्योंकि दोनों राजा तो वसूल करते हैं किन्तु प्रजा की सुख-सुविधाओं की चिन्ता दोनों में से कोई भी नहीं करता

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - सज्जन व्यक्ति का सम्मान नहीं होता क्योंकि उससे किसी को भय नहीं होता। वह अ होकर भी किसी को हानि नहीं पहुँचाता । उदाहरण के लिए चन्द्र, वृहस्पति आदि जो शान्त प्रकृति के ग्रह हैं, उनके लिए

कोई जप-दान आदि नहीं किया जाता, उन्हें अच्छे ग्रह कहकर छोड़ दिया जाता है किन्तु भौम, शनि आदि जो क्रूर और दुष्ट स्वभा के ग्रह हैं, उनके लिए जप और दान किया जाता है।

(स) इन पंक्तियों में किस गुण का प्रयोग किया गया है?

(स) प्रसाद गुण।

5. नर की अरु नल नीर की गति एकै करि जोड़।

जेतौ नीचौ ह्वै चलै, तेती ऊँची होइ ॥

बढ़त बढ़त सम्पति, सलिलु, मन- सरोजु बढ़ि जाइ । घटत-घटत सुन फिरि घंटे, बरु समूल कुम्हिलाइ ॥

(अ) तालाब के पानी के बढ़ने और सुखने का कमल पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- (अ) जब तालाब में पानी बढ़ता है तो कमल भी पानी के साथ बढ़ता चला जाता है किन्तु जब तालाब में पानी सूखता है तब कमल घटता नहीं बल्कि सूख जाता है ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - कविवर बिहारी कहते हैं कि मनुष्य और नल का जल -इन दोनों की एक जैसी स्थिति दिखाई पड़ती है। इन दोनों का स्वभाव है कि ये जितना नीचे होकर चलते हैं, उतने ही ऊँचे उठते हैं।

(स) इन पंक्तियों में किस भाषा का प्रयोग किया गया है?

(स) शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा

6. जौ चाहत, चटक न घटै, मैलौ होइ न मित्त।

रज- राजसु न छुवाइये, नेह-चीकने चित्त ॥

बुरौ बुराई जौ तजै, तौ चितु खरौ डरातु ।

ज्यौं निकलंकु मयंकु लखि, गनैं लोग उतपातु ॥

(अ) यदि कभी चन्द्रमा कलंक- रहित दिखाई दे तो लोग क्या आशंका करते हैं?

उत्तर-- (अ) यदि कभी चन्द्रमा कलंक- रहित दिखाई पड़ता है तो लोग यही आशंका करते हैं कि कोई उत्पात होने वाला है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - यदि तुम चाहते हो कि मित्रता की चमक न घटे अर्थात मित्रता बढ़ती ही जाये और चाहते हो कि मित्रता में मैलापन न हो तो स्नेह से चिकने मन रूपी दर्पण पर धन सम्बन्धी धूल को मत चढ़ने दो ।

(स) इन पंक्तियों में किस शैली का प्रयोग किया गया है?

(स) मुक्तक काव्य शैली।

पाठ 5. सुमित्रानन्दन पन्त

चींटी

1. चींटी को देखा?

वह सरल, विरल, काली रेखा

तम के धागे-सी जो हिल-डुल

चलती लघुपद पल-पल मिल-जुल

वह है पिपीलिका पाँति !
देखो ना, किस भाँति
काम करती वह सतत !
कन-कन करके चुनती अविरत !

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- (अ) सन्दर्भ-प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'चींटी' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता प्रकृति के सुकुमार कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त हैं। इसमें चींटी की कर्मठता का सजीव चित्रण किया गया है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - कवि कहता है कि चींटी बहुत सीधी एवं अति पतली काली रेखा-सी दिखाई पड़ती है जो अन्धकार के धागे के समान हिलती-डुलती नजर आती है।

(स) इन पंक्तियों में किस रस का प्रयोग किया गया है?

(स) शान्त रस ।

पाठ 6. महादेवी वर्मा

हिमालय से

1. नभ में गर्वित झुकता न शीश
पर अंक लिए हैं दीन क्षार !
मन गल जाता नत विश्व देख,
तन सह लेता है कुलिश-भार !
कितने मृदु कितने कठिन प्राण ! '

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर - (अ) सन्दर्भ - छायावादी कवियों में महादेवी जी का स्थान बहुत ऊँचा है । छायावादी युग के एक महादेवी जी हैं। प्रस्तुत पद्यांश 'हिमालय से' शीर्षक कविता से उद्धृत किया गया है जो महादेवी जी के 'सान्ध्य गीत ' वृहत् चतुष्टय में से नामक काव्यसंग्रह से संकलित है। कवयित्री हिमालय की महिमा का वर्णन करती है और उसके समान गुण ग्रहण की कामना करती है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - हे हिमालय ! तुम्हारा सिर गर्व के साथ आकाश में ऊँचा उठा है जो कभी झुकता नहीं ।परन्तु तुम अपनी गोद में तुच्छ धूल को धारण किये रहते हो ।

(स) इन पंक्तियों में किस शैली का प्रयोग किया गया है?

(स) छायावादी प्रतीकात्मक एवं भावात्मक शैली ।

2. टूटी है तेरी कब समाधि
झंझा लौटे शत हार-हार;
बह चला दृगों से किन्तु नीर !
सुनकर जलते कण की पुकार !

सुख से विरक्त दुख में समान ।

(अ) कवयित्री के अनुसार हिमालय के आँसू पिघलकर किस रूप में निकलते हैं?

उत्तर - (अ) कवयित्री के अनुसार हिमालय के आँसू पिघलकर नदियों के रूप में बह निकलते हैं।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या- तुम सुख-दुःख में समान रहने वाले विरक्त महर्षि हो । मोहासक्ति से परे हो फिर भी मानवता की पीड़ा को हरने वाले महर्षि हो जो मानवता के कल्याण हेतु समाधि में लीन है।

(स) इन पंक्तियों में किस भाषा का प्रयोग किया गया है?

(स) शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली ।

3. मेरे जीवन का आज मूक,
तेरी छाया से हो मिलाप;
तन तेरी साधकता छू ले,
मन ले करुणा की थाह नाप !
उर में पावस दृग में विहान !

(अ) उपर्युक्त पद्यांश में कवयित्री क्या चाहती है ?

उत्तर- (अ) उपर्युक्त पद्यांश में कवयित्री चाहती है कि उसका हृदय हिमालय के समान करुणायुक्त तथा दयालु हो

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या- मेरी अभिलाषा है कि मेरे जीवन का तेरी छाया के साथ मूक मिलन हो अथवा मेरा शरीर तेरी साधकता को स्पर्श करे अर्थात मुझमें हिमालय के समान साधना-शक्ति उत्पन्न हो ।

(स) इन पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है?

(स) मानवीकरण अलंकार ।

पाठ 7. रामनरेश त्रिपाठी

स्वदेश-प्रेम

1. अतुलनीय जिनके प्रताप का, साक्षी है प्रत्यक्ष दिवाकर ।
घूम-घूम कर देख चुका है, जिनकी निर्मल कीर्ति निशाकर ॥
देख चुके हैं जिनका वैभव, ये नभ के अनन्त तारागण ।
अगणित बार सुन्न चुका है नभ, जिनका विजय घोष रण-गर्जन ॥

(अ) हमें कौन से पुर्वजों का स्मरण करना चाहिए?

उत्तर- (अ) हमें उन पूर्वजों का स्मरण करना चाहिए जिनके अनुपम प्रताप का साक्षी सूरज आज भी दे रहा है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - हमारे पूर्वज ऐसे थे जिनके ऐश्वर्य को तारों का अनंत समूह बहुत पहले देख चुका था ।

(स) इन पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है?

(स) अनुप्रास, रूपक तथा उपमा अलंकार ।

2. शोभित है सर्वोच्च मुकुट से, जिनके दिव्य देश का मस्तक,

गूँज रही हैं सकल दिशाएँ जिनके जय-गीतों से अब तक ॥
जिनकी महिमा का है अविरल, साक्षी सत्य-रूप हिम- गिरि-वर ।
उतरा करते थे विमान दल जिसके विस्तृत वक्षस्थल पर ॥

(अ) हिमालय किनकी महिमा का साक्ष्य आज भी दे रहा है?

उत्तर- (अ) हिमालय हमारे देश के चिरस्मरणीय पूर्वजों की महिमा का साक्ष्य आज भी दे रहा है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - त्रिपाठी जी कहते हैं कि हमारा देश भारत हमारे चिरस्मरणीय पूर्वजों का देश है। इसका मस्तक हिमालय रूपी सर्वोच्च मुकुट से सुशोभित है।

(स) इन पंक्तियों में किस भाषा का प्रयोग किया गया है?

(स) सरल, सरस, साहित्यिक खड़ीबोली ।

3. सागर निज छाती पर जिनके अगणित अर्णव- पोत उठाकर ।
पहुँचाया करता था प्रमुदित, भूमंडल के सकल तटों पर ॥
नदियाँ जिसकी यशधारा-सी बहती हैं अब भी निशिवासर ढूँढ़ो,
उनके चरण-चिह्न भी पाओगे तुम इनके तट पर ॥

(अ) कवि ने नदियों की निर्मल जलधाराओं का वर्णन किस सन्दर्भ में किया है?

उत्तर- (अ) कवि ने नदियों की निर्मल जलधाराओं का वर्णन हमारे महान पूर्वजों के यश की उज्ज्वल जलधाराओं के सन्दर्भ में किया है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या – कवि देशवासियों का ध्यान देश के अतीत गौरव की ओर आकर्षित करता है । है बन्धुओ ! यह वह देश है जिसका अतीत काल में उन्नत व्यापार था । इस देश के समुद्री जहाज समुद्र के वक्षस्थल पर घूमते हुए संसार के सभी तटों पर पहुँचते थे।

(स) इन पंक्तियों में किस गुण का प्रयोग किया गया है?

(स) ओज गुण ।

4. <u>विषुवत् रेखा का वासी जो, जीता है नित हॉफ - हाँफ कर ।</u>
रखता है अनुराग अलौकिक, वह भी अपनी मातृभूमि पर ॥
ध्रुववासी, जो हिम में, तम में, जी लेता है कॉप-कॉप कर ।
वह भी अपनी मातृभूमि पर कर देता है प्राण निछावर ॥

(अ) ध्रुव प्रदेश में रहने वाले लोग किस प्रकार जीवन व्यतीत करते हैं?

उत्तर - (अ) ध्रुव प्रदेश में रहने वाले लोग घोर अन्धकार में शीत के कारण काँप-काँप कर जीवन व्यतीत करते हैं।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - कवि देशप्रेम की महत्ता बताता है। वह अपने देशवासियों से कहता है- "हे बन्धुओ ! जो व्यक्ति भूमध्यरेखीय प्रदेश में रहते हैं, वे गर्मी की अधिकता के कारण हाँफ-हॉफ कर जीते हैं, फिर भी वे लोग अपनी मातृभूमि से अलौकिक प्रेम करते हैं।

(स)इन पंक्तियों में किस रस का प्रयोग किया गया है?

(स) वीर रस ।

5. जब तक साथ एक भी दम हो, हो अवशिष्ट एक भी धड़कन ।

रखो आत्म- गौरव से ऊँची-पलकें, ऊँचा सिर, ऊँचा मन ॥

एक बूँद भी रक्त शेष हो, जब तक तन में हे शत्रुंजय !

दीन वचन मुख से न उचारो, मानो नहीं मृत्यु का भी भय ॥

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर - (अ) सन्दर्भ - यह पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक की 'स्वदेश-प्रेम' शीर्षक कविता से उद्धृत है जिसके रचयिता कविवर श्री रामनरेश त्रिपाठी हैं। प्रस्तुत पद्य में कवि देशप्रेम की भावना का संचार करता है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - कवि कहता है कि हे मेरे देशवासियो ! जब तक तुम्हारा एक भी सांस तुम्हारे साथ है तब तक आत्मगौरव के साथ अपनी पलकें ऊँची रखो, अपना सिर तथा मन सदा ऊँचा रखो। किसी के सामने लज्जा से आँखें नीची न करो, भय से सिर न झुकाओ और दीनता से मन छोटा न करो।

(स) इन पंक्तियों में किस छन्द का प्रयोग किया गया है?

(स) नाटक छन्द ।

6. निर्भय स्वागत करो मृत्यु का, मृत्यु एक है विश्राम स्थल!

जीव जहाँ से फिर चलता है, धारण कर नव जीवन-संबल ॥

मृत्यु एक सरिता है, जिसमें, श्रम से कातर जीव नहाकर ।

फिर नूतन धारण करता है, काया रूपी वस्त्र बहाकर ॥ --

(अ) कवि ने नदी का मृत्यु के सन्दर्भ में क्या वर्णन किया है?

उत्तर- (अ) कवि के अनुसार मृत्यु एक नदी है जिसमें जीवनभर परिश्रम से थका हुआ जीव स्नान करता है, पुराने शरीर रूपी वस्त्र को इस नदी में ही प्रवाहित कर देता है और नया शरीर रूपी वस्त्र धारण करता है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - कवि कहता है कि मातृभूमि के गौरव की रक्षा के लिए प्राणों का बलिदान देने में भी संकोच नहीं करना चाहिए। इसलिए हे बन्धु ! मृत्यु का निर्भय होकर स्वागत करो क्योंकि मृत्यु तो जीवनयात्रा में विश्राम करने का स्थान है।

(स) इन पंक्तियों में किस गुण का प्रयोग किया गया है?

(स) प्रसाद गुण।

7. सच्चा प्रेम वही है जिसकी तृप्ति आत्म-बलि परं हो निर्भर ।

त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है, करो प्रेम पर प्राण निछावर ॥

देश-प्रेम वह पुण्य - क्षेत्र है, अमल, असीम, त्याग से विलसित।

आत्मा के विकास से जिसमें, मनुष्यता होती है विकसित ॥

(अ) कवि का सच्चे प्रेम से क्या अभिप्राय है?

उत्तर - (अ) कवि प्रेम की व्याख्या करता हुआ कहता है कि हे प्रिय बन्धु ! सच्चा प्रेम वह है जिसकी सन्तुष्टि आत्मबलिदान पर आधारित हो। सच्चा प्रेमी वही है जो अपने प्रेय से कुछ स्वार्थ नहीं रखता, अपितु उसके लिए अपने प्राणों का बलिदान देने को तैयार रहता है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - प्रेम में त्याग भावना के विकसित होने से आत्मा का विकास होता है। मनुष्य मात्र में ही आत्मा है, जब इस प्रकार की एकता का भाव उदय होता है तो मानवता का विकास होता है।

(स) इन पंक्तियों में किस शैली का प्रयोग किया गया है?

(स) प्रभावपूर्ण शैली।

पाठ 8. माखनलाल चतुर्वेदी

पुष्प की अभिलाषा

1. चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊँ,
   चाह नहीं प्रेमी-माला में विंध प्यारी को ललचाऊँ,
   चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि ! डाला जाऊँ
   चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ू भाग्य पर इठलाऊँ ।

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

उत्तर- (अ) सन्दर्भ - प्रस्तुत गीत चतुर्वेदी जी के 'युगचरण' नामक काव्य से संकलित 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक गीत से लिया गया है। इसमें देशभक्तों के प्रति श्रद्धाभक्ति का भाव व्यक्त हुआ है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ब) 'रेखांकित अंश की व्याख्या - कवि फूल के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है। फूल कहता है कि मुझे यह चाह नहीं है कि मुझे किसी सुर-सुन्दरी के गहनों में गूँथा जाये।

(स) इन पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है?

(स) अनुप्रास अलंकार

पाठ 9. सुभद्राकुमारी चौहान

झाँसी की रानी की समाधि पर

1. यहीं कहीं पर बिखर गयी वह, भग्न विजय माला-सी
   उसके फूल यहाँ संचित हैं. है यह स्मृति- शाला-सी ॥
   सहे बार पर दार अंत तक, लड़ी वीर बाला-सी ।
   आहूति-सी गिर पडी चिता पर चमक उठी ज्वाला-सी ॥

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर—(अ) सन्दर्भ—कवयित्री श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान की कविता में सच्ची वीरांगना का ओज और शौर्य हुआ है। प्रस्तुत पद्यांश सुभद्रा जी की 'झाँसी की रानी की समाधि पर' शीर्षक कविता से उद्धृत किया गया है जिसमें पूर्व तथा आत्मोत्सर्ग की प्रबल कामना प्रकट हुई है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - कवयित्री झाँसी की रानी की समाधि को देखकर कहती है कि इस समाधि के आसपास ही कहीं वह स्थान है जहाँ वह रानी लक्ष्मीबाई प्रहार सहते हुए भी वीरबाला के समान लड़ती रही। अन्त में वह यज्ञ में के समान चिता पर गिर पड़ी और अग्नि की लपटों के समान ही उसका यश चमक उठा!

(स) इन पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है?

(स) रूपक, अनुप्रास तथा उपमा अलंकार का सुन्दर चमत्कार है।

2. बढ़ जाता है मान वीर का, रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की, भस्म यथा सोने से ॥
रानी से भी अधिक हमें अब, यह समाधि है प्यारी ।
यहाँ निहित है स्वतन्त्रता की, आशा की चिनगारी ॥

(अ) कवि ने वीरों का सम्मान किस प्रकार किया है?

उत्तर- (अ) संसार में वीरों का सम्मान होता है। जब कोई वीर युद्ध में बलि चढ़ जाता है, इससे उसका सम्मान और अ बढ़ जाता है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - रानी लक्ष्मीबाई की इस समाधि से प्रेरणा प्राप्त करके हम स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करते रहेंगे। इस समाधि में स्वतन्त्रता की आशा चिनगारी के रूप में दबी है।

(स) इन पंक्तियों में किस छन्द का प्रयोग किया गया है?

(स) गीतिका छन्द ।

3. पर कवियों की अमर गिरा में, इसकी अमिट कहानी
स्नेह और श्रद्धा से गाती है, वीरों की बानी ॥
बुंदेले हरबोलों के मुख, हमने सुनी कहानी ।
खूब लडी मर्दानी वह थी, झाँसी वाली रानी ॥
यह समाधि यह चिर-समाधि है झाँसी की रानी की ॥

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर - (अ) सन्दर्भ - कवयित्री श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान की कविता में सच्ची वीरांगना का ओज और शौर्य प्रकट हुआ है । प्रस्तुत पद्यांश सुभद्रा जी की 'झाँसी की रानी की समाधि पर शीर्षक कविता से उद्धृत किया गया है जिसमें अपूर्व साहस तथा आत्मोत्सर्ग की प्रबल कामना प्रकट हुई है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या -- हमने यह गाथा बुन्देलखण्डवासी हरबोलों के मुख से सुनी है कि झाँसी की रानी वीर पुरुषों के समान बड़ी वीरता से अंग्रेजों से लड़ी थी।

(स) इन पंक्तियों में किस भाषा का प्रयोग किया गया है?

(स) शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली ।

पाठ 10. मैथिलीशरण गुप्त

भारत माता का मन्दिर यह

1. भारत माता का मन्दिर यह समता का संवाद जहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ है पावें सभी प्रसाद यहाँ ।
जाति-धर्म या संप्रदाय का, नहीं भेद-व्यवधान यहाँ,
सबका स्वागत, सबका आदर सबका सम सम्मान यहाँ ।
राम, रहीम, बुद्ध, ईसा का सुलभ एक-सा ध्यान यहाँ,
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के गुण गौरव का ज्ञान यहाँ ।

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- (अ) सन्दर्भ - प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित पाठ 'भारत माता का मन्दिर यह नामक पाठ से अवतरित बिया गया है, इसके रचयिता राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त हैं। प्रस्तुत अवतरण में कवि ने भारत माता के मन्दिर में समता एवं के कल्याणं प्रसाद की चर्चा की है जहाँ कोई जातीय भेदभाव नहीं है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।'

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - कविवर मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं कि यह भारत माँ का मन्दिर है, जहाँ राम, रहीम, बुद्ध तथा ईसा का सभी समान भाव से ध्यान लगाते हैं। ऐसा नहीं है कि कोई किसी अवतार का आदर करे और किसी से घृणा करे। इतना ही नहीं, यहाँ संसार की सभी संस्कृतियों के गौरव की गाथाएँ गाई जाती हैं, मात्र एक संस्कृति का ही ढिंढोरा नहीं पीटा जाता ।

(स) इन पंक्तियों में किस भाषा का प्रयोग किया गया है?

(स) प्रस्तुत अवतरण की 'भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

2. नहीं चाहिए बुद्धि बैर की भला प्रेम का उन्माद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है, पावें सभी प्रसाद यहाँ
सब तीर्थों का एक तीर्थ यह हृदय पवित्र बना लें हम
आओ यहाँ अजातशत्रु बन, सबको मित्र बना लें हम
रेखाएँ प्रस्तुत हैं, अपने मन के चित्र बना लें हम ।
सौ-सौ आदर्शों को लेकर एक चरित्र बना लें हम ।

(अ) हम अपने चरित्र का निर्माण किस प्रकार कर सकते हैं?

उत्तर- (अ) हमारे सामने विविध प्रकार के अनेक आदर्श जैसे सत्याचरण करें, न्यायानुकूल चलें, स्वाध्याय से कभी प्रमाद न करें, आलस्य बुरी बला है, हम मातृभक्त बनें, पितृभक्त बनें, आचार्य भक्त बनें तथा अतिथि भक्त बनें, ये सभी आदर्श हैं, इन्हें हम अपने जीवन में उतारकर एक सुदृढ़ चरित्र का निर्माण कर सकते हैं।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - कविवर मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं कि हमारा भारत जो भारत माता का मन्दिर है यह ऐसा-वैसा नहीं है, यह तो सभी तीर्थों में पवित्र तीर्थ है, पावन भूमि है। यहाँ पर निवास करते हुए हमें अपना हृदय पवित्र बनाना चाहिए । त्याग सेवा परोपकारादि सकारात्मक भावों को अपनाना चाहिए तथा ईर्ष्या, द्वेष, भेदभाव एवं कुटिलता जैसे नकारात्मक भावों को त्याग देना चाहिए, तभी हमारा हृदय पवित्र बनेगा।

(स) इन पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है?

(स) 'अजातशत्रु' में श्लेष अलंकार की छंटा दृष्टव्य है । "सौ-सौ " में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है ।

3. बैठो माता के आँगन में नाता भाई-बहन का
समझे उसकी प्रसव वेदना वही लाल है माई का
एक साथ मिल बाँट लो अपना हर्ष विषाद यहाँ है
सबका शिव कल्याण यहाँ है पावें सभी प्रसाद यहाँ ।
मिला सेव्य का हमें पुजारी सकल काम उस न्यायी का
मुक्ति लाभ कर्तव्य यहाँ है एक-एक अनुयायी का
कोटि-कोटि कण्ठों से मिलकर उठे एक जयनाद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है पावें सभी प्रसाद यहाँ ।

(अ) उपर्युक्त पद्यांश में कवि का माता से आशय क्या है?

उत्तर- (अ) उपर्युक्त पद्यांश में कवि का माता से आशय 'भारत माता' से है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - हम ईश्वर की समाराधना करेंगे तो हमें मुक्तिलाभ प्राप्त होगा। मोक्ष प्राप्त करना हमारा. कर्तव्य है, करणीय लक्ष्य है जिसे ईश्वर का हर एक अनुयायी प्राप्त करना चाहता है।

(स) इन पंक्तियों में किस रस का प्रयोग किया गया है?

(स) प्रस्तुत अवतरण में शान्त रस बह रहा है।

पाठ 11. अशोक वाजपेयी

भाषा एकमात्र अनन्त है

1. न बच्चा रहेगा,
न बूढ़ा,
न गेंद, न फूल, न दालान
रहेंगे फिर भी शब्द
भाषा एकमात्र अनन्त है !

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर - (अ) सन्दर्भ - प्रस्तुत कविता 'भाषा एकमात्र अनन्त है हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित कवि श्री अशोक वाजपेयी द्वारा विरचित है। इस कविता में विश्व की नश्वरता पर प्रकाश डालते हुए कवि भाषा की अनन्तता पर प्रकाश डालता है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - कवि कहता है कि धरती पर उसे जो भी वस्तुएँ दिखलाई देती हैं, वे सभी नश्वर हैं,वान हैं। इन सबके नष्ट होने पर भी एक चीज शेष रहती है और वह है शब्द शब्द अमर हैं। अत: शब्दों के रूप में भाषा ही एक ऐसी वस्तु है जो संसार में अमर है, असीम है, अनन्त है। भाषा का अन्त नहीं होता है, वह सतत प्रवाहमान है।

(स) इन पंक्तियों में किस शैली का प्रयोग किया गया है?

(स) मुक्तक काव्य शैली ।

पाठ 12. श्यामनारायण पाण्डेय

हल्दीघाटी

1. मेवाड़ केसरी देख रहा, केवल रण का न तमाशा था।
   वह दौड़-दौड़ करता था रण, वह मान रक्त का प्यासा था ॥
   चढ कर चेतक पर घूम-घूम करता सेना रखवाली था
   महामृत्यु को साथ-साथ मानो प्रत्यक्ष कपाली था ॥

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- (अ) सन्दर्भ - प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक के श्री श्यामनारायण पाण्डेय विरचित 'हल्दीघाटी' शीर्षक पाठक से अवतरित किया गया है। प्रस्तुत अवतरण में महाराणा प्रताप के युद्ध कौशल का चित्रण किया गया है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - ओजस्वी कवि श्री श्यामनारायण पाण्डेय महाराणा के युद्ध कौशल का वर्णन इस प्रकार कर रहे हैं कि मेवाड़ का सिंह महाराणा प्रताप केवल युद्ध का खेल नहीं देख रहा था, वह तो दौड़-दौड़ कर युद्ध कर रहा था ।अपने चेतक नाम के घोड़े पर बैठकर वह दौड़ते हुए मानसिंह की खोज करता हुआ अपनी सेना का रक्षक बना हुआ था ।

(स) इन पंक्तियों में किस शैली का प्रयोग किया गया है?

(स) शैली वीररस पूर्ण, ओजस्विनी है।

2. चढ़ चेतक पर तलवार उठा, रखता था भूतल पानी को ।
   राणा प्रताप सिर काट-काट, करता था सफल जवानी को ॥
   सेना नायक राणा के भी, रण देख-देख कर चाह भरे।
   मेवाड़ सिपाही लड़ते थे दूने तिगुने उत्साह भरे ॥

(अ) महाराणा प्रताप किस प्रकार अपनी जवानी को पौरुष दिखा-दिखा कर सफल बना रहे थे?

उत्तर- (अ) महाराणा प्रताप अपने शत्रुओं के सिरों को काट-काट कर अपनी जवानी को पौरुष दिखा-दिखा कर सफल बना रहे थे।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।.

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - यशस्वी कवि श्री श्यामनारायण पाण्डेय महाराणा के युद्ध-कौशल का वर्णन करते हुए कहते हैं कि महाराणा प्रताप जिस जीत की उत्कट अभिलाषा से युद्ध कर रहे थे वैसे ही दुगने-तिगुने उत्साह से उसके मेवाड़ी वीर सैनिक भी युद्धभूमि में युद्ध कर रहे थे तथा शत्रुओं को काट-काट कर मार गिरा रहे थे।

(स) इन पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है?

(स) यहाँ देख-देख' तथा 'काट-काट' में पुनरुक्ति प्रकाश तथा पूरे अवतरण में अतिशयोक्ति अलंकार की छटा दर्शनीय है।

3. क्षण मार दिया कर कोड़े से, रण किया उतर कर घोड़े से ।
   राणा रणकौशल दिखा-दिखा, चढ़ गया उतर कर घोड़े से ॥
   क्षण भीषण हलचल मचा मचा, राणा-कर की तलवार बढ़ी।
   था शोर रक्त पीने का यह रणचण्डी जीभ पसार बढी ॥

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- (अ) सन्दर्भ – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक के श्री श्यामनारायण पाण्डेय विरचित 'हल्दीघाटी' शीर्षक पाठक से अवतरित किया गया है। यहाँ महाराणा प्रताप के वीरतापूर्वक युद्ध करने का मनोहारी चित्रण हुआ है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - श्यामनारायण पाण्डेय कहते हैं कि महाराणा प्रताप जब अपने हाथ की तलवार को शत्रुओं का विनाश करते हुए आगे बढ़ाते थे तो चारों ओर शोर हो जाता था कि यह तलवार नहीं है यह तो रक्तपान करने के लिए तलवार रणचण्डी के रूप में उठकर आगे बढ़ रही है। यह मानो रणचण्डी की जीभ-सी फैल उठी है।

(स) इन पंक्तियों में किस रस का प्रयोग किया गया है?

(स) वीर रस ।

4. जो साहस कर बढ़ता उसको, केवल कटाक्ष से टोक दिया।
   जो वीर बना नभ-बीच फेंक, बरछे पर उसको रोक दिया ।।
   क्षण उछल गया अरि घोड़े पर, क्षण लड़ा सो गया घोड़े पर ।
   बैरी दल से लड़ते-लड़ते, क्षण खड़ा हो गया घोड़े पर ।।

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

उत्तर- (अ) सन्दर्भ – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक के श्री श्यामनारायण पाण्डेय विरचित 'हल्दीघाटी' शीर्षक पाठक से अवतरित किया गया है। प्रस्तुत अवतरण में महाराणा प्रताप का रिपु की गजवाहिनी सेवा पर टूट पड़ने का बड़ा ही सजी चित्रण है।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ब) रेखांकित अंश की व्याख्या - जो भी शत्रु आगे बढ़ने का प्रयास करता था या साहस दिखाता था, महाराणा उसे आँखों के इशारों से ही रोक देता था। इतने पर भी यदि वह वीर बनने की कोशिश करता था, अपनी वीरता दिखाता था तो राणा उसे उठाकर आकाश की ओर फेंक देते थे तथा नीचे बरछी लगाकर उसे रोक देते थे, निष्प्राण बना देते थे।

(स) इन पंक्तियों में किस भाषा का प्रयोग किया गया है?

(स) भाषा की दृष्टि से प्रस्तुत अवतरण चित्रात्मक बन पड़ा है, ओजपूर्ण एवं संजीव भाषा अति प्रभावशालिनी है।